International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 14 Issue 5 || May 2025 || PP. 18-22

संत साहबरामराहड के साहित्य का सामाजिकयुगबोध

डॉ० शर्मीला

सहायकप्रो.

हिंदीविभाग

गुरु जम्भेश्वरविज्ञान एवंप्रौद्योगिकी

विश्वविद्यालय, हिसार

सार :

संत साहबरामराहड़ का साहित्य अपने युग की चेतनाकोसमाहितकिए हुए है। ये अपनेपरिवेश के प्रतिपूर्णसजगरहेहैं चाहे वहसामाजिकहो, आर्थिकहो, धार्मिक–सांस्कृतिकहो या भाषायीपरिवेशहो।भलेहीइनकासाहित्य संत–साहित्य की कोटिमेंआताहैलेकिनइनकासमसामयिकपरिवेशउसमेंपूर्णतः जीवितहै।हरियाणा के हिसार, हाँसी, फतेहाबाद एवंसिरसा की क्षेत्रीयता का इन्होंनेवर्णनकियाहै।इसकेसाथहीइन्होंनेआसपास के गाँवों की घटनाओं का जीवंतचित्रण प्रस्तुतकियाहै। ऐतिहासिक घटनाओंमेंकल्पना का संयोजनकरकेइन्होंनेकुछमौलिकउद्भावनाएँ भी की हैं।इसकेअतिरिक्त ये सन् 1857की क्रांति के साक्षीरहेहैं। संत सहाबरामराहड ने सन् 1857की क्रांति का वर्णन 'जम्भसार' मेंबड़ेविस्तार से कियाहै।जम्भसार भाग–2 में 'संवत् उन्नीससौ चवदह की गदर' शीर्षक से इस घटना का वर्णनकियाहै।हाँसी एवंहिसारमेंक्रांति के कुछ ऐतिहासिकसाक्ष्य भीमिलतेहैंजिससे इनके साहित्य मेंवर्णित घटना की पुष्टिहोतीहै। 'जम्भसार' जाम्भाणी साहित्य में एक नईकड़ीजोड़ताहैजो भक्ति के साथ–साथअपने समय के परिदृश्य कोभीप्रस्तुतकरताहै।

keywords: ***संत,साहबराम,साहित्य,सामाजिक,युगबोध***

Date of Submission: 25-04-2025 Date of acceptance: 04-05-2025

युगबोध दो शब्दों के सुमेल से बनाहै– युगऔरबोध। युग से तात्पर्यहै– समय या कालतथाबोध से तात्पर्यहै–ज्ञान।अतः युगबोध से अभिप्राय किसीकालविशेष की मान्यताओं, परिस्थितियों व संदर्भों के बोध से है। युगबोध का महत्वउसकेविकसित एवंपरिवर्तितहोने से है।प्रत्येक युग की अपनी एक विशेषपहचान एवंमहत्ताहोतीहै।इसीकारणप्रत्येक युगअन्य युगों से भिन्नपहचान रखताहै।इसकेपरिणामस्वरूपअतीतवर्तमान से भिन्नता रखताहै। समय के साथपरिस्थितियाँ, प्रवृत्तियाँ व संदर्भबदलजातेहैं।इसलिए प्रत्येक युग का बोध सर्वथाभिन्नहै।प्रत्येक युग की अपनीसामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक–सांस्कृतिक एवंआर्थिकपरिस्थितियाँ होतीहैं।इन्हींपरिस्थितियों से किसी युगविशेष की पहचानबनतीहै।इसकेसाथहीप्रत्येकदेश व समाज का अपना एक बोध होताहैऔर युगपरिवर्तितहोने के साथउसकाबोध भीबदलजाताहै।बोध एक युग का दर्पणहीनहीं; बल्किविद्रोह का स्वर भीहैजो युगविशेषमें रूढ़ियोंऔरअमानवीय घटनाओं के लिए आवाजभीउठाताहै।

युगबोध मानवमस्तिष्ककी एकसहजप्रवृत्तिहै।जबमनुष्य अपनीचिंतन शक्ति के माध्यम से अतीतकोवर्तमान के संदर्भमेंदेखताहैतोबहुतकुछपरिवर्तितमहसूसकरताहै।"समाज, संस्कृति, धर्म, आध्यात्म, नैतिकताआदि का स्वरूपजिस युगमेंजैसारहताहैउसेठीकउसी रूपमेंग्रहणकरअभिव्यक्तकरनाकवि, कथाकार व नाटककार के साहित्य का युगबोध कहाजाताहै।"

लेखकसमकालीन जीवन के जिनअनुभवों के आधारपरचेतना के स्तरपरजिसजागरूकचिंतनकोजन्मदेताहैवह 'बोध' होताहै। यहीबोध युगजीवन की सम्प्रक्ति के कारण युगबोध का अभिधानपाताहै। युगबोध आधुनिकता से जुड़ाहुआहै।वास्तवमेंप्रत्येक युगकाल की दृष्टि से अपनेवर्तमान रूपमेंआधुनिकहीरहताहै।आधुनिकता, युगबोध और युगीनचेतनासमानार्थीकहेजासकतेहैं।

अतः कहाजासकताहैकि युगबोध का कोईनिश्चितमापदंडनहींहैजिसकेआधारपर इसे परिभाषितकियाजासके।विभिन्नविद्वानों ने इसे अपने–अपनेढंग से परिभाषितकियाहै। युगबोध एक धाराहैजोकालसापेक्ष है, जिसकीभावचेतनामनुष्य, समाजऔरउसकेपरिवेश से बंधीहुईहै। युगबोध व्यक्तिमेंसहजउभरकरनहींआता, अपितुसंवेदनशीलकथाकारजोसमाज की गतिविधियों से परिचितहै, अपनीअनुभूतियों व युगीन यथार्थचेतना के माध्यम से अपनीरचनाओंमें रूपायितकरताहै।

साहित्य का अपने समय के परिवेशऔर युगबोध से गहरासंबंध है।साहित्य में युगविशेष की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवंसांस्कृतिकगतिविधियों का संयोजनरहताहै।रचनाकारअपनेपरिवेश से प्रभावितहोकरविभिन्न घटनाओं का विवेचन–विश्लेषणकरताहैऔरउसेकल्पना एवंभाषा के जरिए रचना का आकारदेताहै।रचनाकार की अपने युग के प्रतिचेतनाउसकीरचनाकोजीवंत एवंकालजयीबनातीहै।वहअपनीसामयिकसमस्याओंकोसामनेलाताहैऔर उन परप्रश्नउठाताहै।उसकीअपनेपरिवेश के प्रति यहीचेतना युगबोध कहलातीहै।

भक्ति आंदोलनअपनेपूरेकालखंडमेंसामयिकताऔर युगबोध कोसमेटेहुए है। इस समृद्ध भक्ति–साहित्य मेंसंतों का विशेष योगदानरहाहै। संत शब्दस्वयंमेंबड़ामहत्त्वपूर्णहै। संत सदैवलोककल्याण के कियेलिए जीतेहैं, समाजमें घटितहोनेवालीबड़ी–से–बड़ीऔरछोटी–से–छोटी घटना की ओरउनकी दृष्टिरहतीहै।समाज से कटकर संत साहित्य का उद्देश्य पूरानहींहोसकता।संत–साहित्य चेतना का पुंजरहाहैजिसमेंहमकबीर, नानक, गुरु जम्भेश्वर, दादूदयाल, धन्ना, पीपा, रज्जबआदिसंतों की वाणी का प्रमुखता से वर्णनकरसकतेहैं।संतों ने समाज एवंसाहित्य कोअपनी वाणी के माध्यम से पोषितऔरफलीभूतकिया। इस क्रममेंहरियाणा के नांधडीगाँव के बिश्नोई संत साहबरामराहड का नाम विशेष रूप से लियाजासकताहै।इनकाजन्मसन् 1814 मेंराजस्थानमेंहुंडिया के कुचामनपट्टेमेंहुआथा। ये विष्णोईभक्तरतनोजीराहड़ के वंशजतारोजी के पांचपुत्रोंमें से एक थे–

मेह्दोठुकरोरतनोंराडा।दीन्हौजम्भबिवाणोंचाडा।
थिरोहंसो खैरोजम्भोमियौ।टीलौजआसोदांमोरोमियौ।
रोमियोकिनरोमावलीपांचा।लिया नाम नहिंलागीआंचा।
रायमल रूपोजियौजांणौ।तारो संत गुरु जीवपिछाणौ।
तौरभक्तकैपुत्र पाचां।होमकरै नित शब्दहीवांचा।
तुलछोचेनोंजसरामअनंदा।साहिबरामजम्भकरबंदा।
जेहिसाहिबजम्भसारबनायो।जंभगुरु कोदर्शनपायो।
कृपाकरह्रदैमेंरहेऊ।तातेजंभसारकहिदऐऊ। (जम्भसार भाग–1)

सन् 1855 मेंइन्होंनेरामडावासमेंविल्होजी के मन्दिर के निर्माणकार्यकोपूर्णकरवायाथा।इसकेनिर्माण का कार्य संत गुलाबदासजी ने आरम्भथा, उनके पश्चात इस अपूर्णकार्यको संत साहबरामराहड़ ने फलीभूतकिया। ये कईवर्षतकनांधडीगाँवमेंरहेजोहिसारजिलेमेंस्थितहै।फिर ये दुतारंवालीमेंजाकर बस गए जोवर्तमानमेंपंजाब के फाजिल्काजिलेमेंहै।इन्होंने 'जम्भसार' शीर्षक से रचना की जोदोभागोंमेंउपलब्ध है।उसमेंचौबीसप्रकरणहैजोविभिन्नविषयों से संबंधितहैं। इनके पूर्वजरतनोजी एक सच्चेभक्तथेजिसकावर्णनइन्होने 18वें प्रकरणमेंकियाहैकिकिसप्रकार से ये अपनेससुरालवालों द्वारासाधु की सेवा न करने से रूष्ट हो गए औरबिनाकुछदान–दहेजलिए हीअपनीपत्नीकोसाथलेकरआगयेथे। इस कारण इनके माता–पिताभीक्रुद्ध हो गए औरइन्होंने घरबारछोड़ दिया; आगे की घटना का विस्तारपूर्वकवर्णन 18वें प्रकरणमेंमिलताहै।इसीवंशमेंताराजीहुए जोसच्चेभक्तथेऔरइन्हीं के पुत्र संत साहबरामराहडहुए जिन्होंनेसाधु जीवन से गृहस्थाश्रममेंपरिवेशकिया।

सामाजिकयुगबोध को समझने के लिए पहलेसमाजऔर युगबोध के विषय मेंजाननाआवश्यक है।समाज शब्द की व्युत्पत्ति सम् उपसर्गमेंअज् धातुऔर घञ् प्रत्यय लगने से हुईहै। सम् का अर्थहैसम्यक् रूप से तथाअज् का अर्थहैजाना।डॉ०सीतारामझा 'श्याम' ने समाजकोव्याख्यायितकरतेहुए कहाहै–"सम्यक् अजन्ति–गच्छन्ति जनाः अस्मिन् इतिसमाजः"अर्थात् जिसमेंसभीलोगअच्छीतरहरहें, वहसमाजहै।'

महादेवीवर्मा के अनुसार, "जब एकव्यक्ति, दूसरेव्यक्ति के अस्तित्वकोध्यानमेंरखतेहुए आचरणकरताहै, तोसमाज का आविर्भावहोताहै। ऐसेहीसंबंधोंकोहमसामाजिक कह सकतेहैं।"

राहुलसांकृत्यायन के अनुसार, "...समाजव्यक्तियों के समूह से बढ़ करहैऔरउसीतरहजैसेपुर्जों के ढेरसे घड़ी बढ़ करहै– इस तरहसमाजमनुष्यमनुष्य नहींहै ,बल्किसमाजमनुष्य ग मनुष्य है।"

आगेअज्ञेय समाज की चरमावस्थामनुष्येतरबतातेहुए लिखतेहैं, "समाज से अभिप्राय वहपरिवृतिजिसकेसाथव्यक्तिकिसीप्रकारअपनापामहसूसकरे।वहमानव–समाज का एक अंशभीहोसकताहै, औरमानव–समाज की परिधि से बाहर बढ़ करपशु–पक्षियों (जीव–मात्र) कोभी घेरसकतीहै; बल्कि (चरमावस्था में) मानव–समाजकोछोड़करपशु–पक्षियोंऔरपेड़–पत्तोंतकहीरहजासकतीहै।समाज की इयत्ताअन्ततोगत्वासमाजत्व की भावनापरहीआश्रितहै।"

'समाजव्यक्तिकोवहअवसर व पर्यावरणप्रदानकरताहैजिसमेंमानव–स्वभावव्यक्तित्व का निर्माण व विकाससम्भवहो। इतना हीनहीं, समाजहीव्यक्ति के व्यवहार, विश्वासतथाआचारकोप्रभावित, नियमितऔरनियंत्रित करताहै।'

समाजशास्त्रियों ने समाजकोतीनभागोंमेंविभाजितकियाहैजोआगेजाकरकईउपवर्गोंमेंविभाजितहोजातेहैं–

1) उच्चवर्ग

इसमें शासक, जमींदारऔरपूँजीपतिवर्गआतेहैं।

2) मध्य वर्ग

इसमेंप्रशासन के कार्योंमेंसहभागितानिभानेवालेकर्मचारी, महाजन एवंछोटा–मोटाव्यापारकरनेवालेव्यापारीसम्मिलितहैं।

3) निम्नवर्ग

इसमेंछोटीकाश्त के किसान, मजदूर, कारीगर एवंश्रमिकवर्गआतेहैं।

अतः कहाजासकताहैकिवर्गमनुष्यों का एक ऐसासमूहहोताहैजोसामाजिकस्थिति के आधारपरनिश्चितहोताहै।अपने समय के प्रतिसंवेदनशीलऔरजागरूकहोकरउसकावर्णनकरना युगबोध है।समाज की व्यवस्थाऔरस्थितियों का अपनीचेतना के स्तरपरविवेचन–विश्लेषणकरनासामाजिक युगबोध कहलाताहै। संत साहबरामराहडअपनेतत्कालीनसामाजिकपरिवेश के प्रतिसजगथे।उन्होंनेसमाजमेंव्याप्तजाति–व्यवस्था, नशे की समस्या, जीव–हत्या का विरोध, कुरीतियों एवंबाह्याडंबरोंआदि का वर्णनकियाहै। 19 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध मेंराजाराममोहनराय ने 20 अगस्त, 1828 ई०को 'ब्रह्मसमाज' की स्थापनाकी।इसकेअतिरिक्तसन् 1875 ई०कोस्वामीदयानन्दसरस्वती ने 'आर्यसमाज' की, स्वामीविवेकानंदने रामकिशनमिशनऔरआयरिशमहिला 'एनी बेसेण्ट ने 'थियोसोफिकलसोसायटी' की स्थापनाकी।इनसंस्थाओं की स्थापना के कारणसमाज के नवीनचेतनाउत्पन्नहुई।बालविवाह, जातिवादऔरकन्या–मोलजैसीकुरीतिओं का विरोध शुरू हुआऔर स्त्री–शिक्षा पर बल दियाजानेलगा।इसकाप्रभावकवि की लेखनीमेंभीदिखाईदेताहै।इन्होंनेशिक्षा के बिना स्त्री कोपशु के समानकहाहै–

औरतकूं ऐलमसिखलावौ।सीखेबहुतफायदापावौ।
नहिंसिखलावैबहूनुखसाना। त्रियारहतीपशुसमाना ।

यह इनके साहित्य की प्रगतिशीलचेतनाहैजो स्त्री–शिक्षा परबातकरतीहै।तत्कालीनसमाजमेंकन्या–मोल की प्रथाप्रचलनमेंथीजिसकाकवि ने विरोध किया।इन्होंनेकहा–

जिगमैंकन्यापुन्य परणावै।जोसतगुरु के बालकहावै।
कन्याद्रबकदेनहिंलीजै।आमख तुल्य सोद्रबकहीजै।

बिश्नोईसमाजअपनेपथ से च्युत न हो, इसलिए संत साहबरामराहड़ ने अपनी वाणी से समाजकोजागरूककरने का कार्यकिया।उन्होंनेतत्कालीनसमाजमेंव्याप्तबाह्याडंबरों एवंपाखंडोंपरप्रहारकरतेहुए आंतरिक शुद्धि औरसद्कार्योंपर बल दिया–

मूंडेकेसभेडदोय वारा।सबसेनीचा याहिजमारा।
राख लगायांजोगतिहोवै।निसदिन गधा राख महिसोवै।
धूवांतापेगतिनां भाई। लोहारतपैनिसदिवससदाई।
जंगल वसेमुक्तिकरमांनो।रीछरहत नित वनमेंजानों।

संत साहबराम ने इसकेअतिरिक्ततत्कालीनसमाजमेंव्याप्तनशे की बुराई से सावधानकियाहै। 19 वीं शताब्दीमेंजबनशे के व्यापारऔरप्रभावमें बढ़ोतरीहोरहीथीतथा एक समय के पश्चातइन्हीं के कारणअफीम युद्ध भीहुए।कवि ने इस तरह के नशों के प्रतिलोगोंकोचेताया–

अब एकपापकहूं समझाई।सोकरहीजोनरकमेंजाई।
भांगतमाखू पोसतपीवही। खाय अफीमअंचूक्योंजीवही।
मदरामांसतासकुल खावही। अवस अगतिजाय नरकपरावही।

इस प्रकार संत साहबरामराहड ने समाज के दुर्बलपक्ष का वर्णनकियातोवहींबिश्नोईपंथ के समाजमें योगदान का वर्णनओजस्वी वाणी मेंकिया।संवन्त् 1661 मेंकरमां एवंगौरां ने रामासड़ीमें, श्रीमती खींवणीं खोखर, मोटाजी खोखर एवंनैतूनैण ने तिलासणी मेंतथासंवन्त् 1700 मेंपोलावास के बूचोजी ऐचरा ने वृक्षों की रक्षा के लिए अपनेप्राणत्यागदिए थे।

इनसभी घटनाओं का संत साहबरामराहड से पूर्व के कवियों ने वर्णनकियाहैलेकिनसाहबराम की अभिव्यंजना की अपनीविशेषताहै।इनकी वाणी में एकओजविद्यमानहैजो शासन के विरुद्ध लड़नेके रूपमेंसामनेआताहै।सत्ताप्राकृतिकसंसाधनोंकोअपनी धरोहर समझती थीऔरइसीअहं के कारणराजा–महाराजा, ठाकुरऔरजागीरदारआदिहर समय किसीभीस्थानपर वृक्ष काटनेकोतैयाररहतेथे–

गांवहमारो रूंख हमारा।तामैकाहांहैजोरतुम्हारा।[1]

इसकेविपरीतबिश्नोई वृक्षों व वन्य प्राणियों की रक्षा करनाअपना धर्ममानतेथेऔरकिसीभीपरिस्थितिमेंअपने धर्म से च्युतहोनेकोतैयारनहींथे।

जीव जंत हममारानाहीं। रूंख राय म्हेकाटाकांही।
कोउमारैतोमारन न देवां।जंभगुरु कहिदईसोसेवा।

यदिकोईअहंवश वृक्षोंकोकाटने की कोशिशकरताथातोबिश्नोईअपनेप्राणों का उत्सर्गकरने के लिए तत्पररहतेथे।इसीकारण इस पंथकोतलवार की धार के समानमानागयाहै।

यहतोपंथ खड़ग की धारा।जो न डिगैसोउतरैपारा।
पारगयोफिरबहुर न आवै।जाय जोतकैमाहिसमावै।

इननियमोंपर दृढ़ रहने के कारणहीबिश्नोई वृक्षों की रक्षा मेंसफलरहेहैंऔरराजा–महाराजाओंको वृक्ष न काटने के परवानेजारीकरनेपड़ेहैं। तिलासणी की घटनामेंगोपालदासइसीतरह की प्रतिज्ञाकरताहैऔर क्षमामांगताहै–

जीव जंत पुनभले न मारां। रूंख राय कोउनाहिंसंघारा।

[1]जम्भसार भाग–2, पृ0 317

असपरवानोंलिख करदयऊ।हाथजोड़ कै ठाढे भयउ।[2]

इसकेपश्चातसंवत् 1700 मेंचौतवदितीज, मंगलवारकोबूचोजी ऐचरा ने वृक्षों के संरक्षण के लिए अपनेप्राणन्यौछावरकिए। संत साहबराम ने इस घटना का वर्णनकरतेहुए लिखा हैकिअपनीगलती का अहसासहोनेपरनरसिंघदास ने बिश्नोईसमाज के समक्ष यहप्रतिज्ञा की किवहकभीभीहरे वृक्ष नहींकाटेगाऔर न दूसरोंकोकाटनेदेगा।

यहीस्थिति खेजड़लीबलिदानमेंभीउत्पन्नहोतीहै।राजाअभय सिंह कोभी क्षमाप्रार्थीहोनापड़ाऔरसाथहीपरवानालिख करदेनापड़ाकिभविष्य मेंबिश्नोईयों के गाँवोंमें वृक्ष नहींकाटेजाएंगेऔर न वन्य प्राणियों का शिकारकियाजाएगा।

संत साहबराम ने भूतपूर्वमें घटितहुईइन घटनाओं का वर्णनसमाजमेंचेतनाभरने के लिए किया।कवि के समय मेंभी वृक्षों का कटावऔरवन्य जीवों का शिकारकियाजारहाथा।बिश्नोईसमाज की प्रकृति के प्रतिसमर्पण कम न होइसलिए उन्होंनेइन घटनाओं की अभिव्यक्तिअपनीसंवेदना के धरातलपरकी।इन घटनाओंमेंबिश्नोईसमाज की उग्रता उनके समय की देनहै। इस समय तकसमाजमेंकाफीबदलावआचुकेथे। ये तोइसनेपूर्व की घटनाएँ थीं। इनके समय मेंभीजीव–हत्या की घटनाएँ घटीथींजिनकाइन्होंनेविस्तार से वर्णनकियाहै।संवत् 1900 के आसपासजोधपुर के राजा तख्तसिंहअपनेसेवक के साथविश्नाईयों के गांवहिंगोलीगयाजहांराजाहिरण का शिकारकरनेमेंसफलनहींहुआ।किंतु इस दौरान घोड़े से गिरने के कारणउसका एक हाथटूटगया।इसकेबादराजा ने बिश्नोईयों के गाँवोंमें खेजड़ी न काटने एवंशिकार न करने का परवानादिया।

तख्तसिंघमहाराजजो, ऐसेभए दयाल।
जांभैजी के धरम की, सदाकरीप्रतिपाल।[3]

19 वीं शताब्दी के पूर्वहीकुछबिश्नोईमरुप्रदेशकोछोड़करपंजाब की ओरआ गए थे।"The Bishnois are found also in some numbers in the Sirsa district. Here,in Hisar,they hold 10 villages as proprietors."[4]

सन् 1857 के गदर के समय पंजाब के हिसार के चिंदड़ के तालाबकी घटना का वर्णनकियाहैजिसमेंसीसवाल, सदलपुरऔरआदमपुरआदिगांवों के बिश्नोईजीवों के संरक्षण के लिए मुसलमानों से सांडोंऔरगौओंकोछुड़वानेमेंसफलहोतेहैं।गामणाकाजल ने उस समय चिंदड़ के जोहड़ परसांडकोमारतेहुए मुसलमानोंकोदेखा।

मैंचिंदड़ कैजोडेगयो।गरीबसांडकूंमारतभऐ।[5]

इस घटना के समय साहबरामगंगारामढाकै के गीतासारपरमंथनकररहेथे।[6]बिश्नोईयों की जीव–रक्षार्थभावनाकोदेखतेहुए अंग्रेजों ने बिश्नोईयों के गाँवों की सीमामेंहरे वृक्ष न काटनेतथाशिकार न करने के आदेशदिए थे।[7]

इस प्रकार संत साहबरामराहड ने भूतपूर्वमें घटित घटनाओं के अतिरिक्ततत्कालीनसमाजमेंआँखों देखी घटनाओं का जीवंतवर्णनकिया। यह उनके प्रखरसामाजिक युगबोध का प्रमाणहै।इन घटनाओं के अतिरिक्तकवि ने सन् 1857 की क्रांति का वर्णन 'जम्भसार' में 'संवतउन्नीससौ चवदह की गदर' के नाम से कियाहै।हरियाणा के परिदृश्य मेंसन् 1857 की घटना का वर्णनकरनेवाला यह अनूठाग्रंथहै।कवि ने सन् 1857 की घटना के विषय मेंलिखा है–

कारतूसकैचरबीपासा। खांड घृतमैंचरबीभाशा।
पूरबियाकूँ द्रस्यौपापा।फिरय फोज सब आपहिआपा।
डाक बंध करदीनीजबही । तूटीनाड़ जीवन की कब ही।
नाड़ समानडाकईहजांणौ।देहसमान राज इहडांणौ।[8]

इन्होंनेमुख्य रूप से सदलपुर, आदमपुरऔरचिंदड़ का वर्णनकियाहै।इसकेअलावाआसपास के गाँवोंजिनमेंरावत खेड़ा, बनावली, कालवास, चौद्रिवास, टोंकस, गंगवा, अकूरडी, नांदड़ी, चिकणाास, काजला, कालीरामण, भोड़िया, खारा खेड़ी, बड़ोपल, धांगड, महम्मदपुरगोरखपुरआदिप्रमुख हैं।इसकावर्णनकरतेहुए कविकहताहै–

---

[2]जम्भसार भाग–2, पृ0 321

[3]जम्भसार भाग–2, पृ0 357

[4] Gazetteer of the Hissar District : comp. and Pub. Under the Authority of the Punjab Govt.1883-84, Page no. 38

[5]जम्भसार भाग–2, पृ0 360

[6]जम्भसार भाग–2, पृ० 361

[7]जाम्भोजी, बिश्नोईसम्प्रदाय औरसाहित्य, दूसराभाग, पृ0 1002 (परिशिष्ट)

[8]जम्भसार भाग–2, पृ0 357

गोली अरू बारूदमंगायौ। धूड़ कोट सझकिलोबनायौ।
बंदूकाब्रछी अरू कटारी । तोड़ कड़ाव घड़ाऐसारी ।
बहु धंमसांणजुड़ी सब न्याता । तीसगांवजुड़ीरहीजमाता।[9]

हाँसीऔरहिसारमेंभीक्रांतिके घटितहोने के प्रमाणमिलतेहैं–

मिरटमारहांसीआय भारी।हंसारगदरमच्यौबहुभारी।
राजामरेलोकविचलाऐ।आपसमें सब लूटमचाऐ।[10]

डॉ.महेन्द्र सिंह ने अपनीपुस्तकहिसार–ए–फिरोजा (इतिहास के झरोखे में) मेंसन् 1857 की क्रांति के संबंध मेंलिखा है,'' भट्टू, खाराबरवाला, अग्रोहा, गोरखपुर, बीघड़, माजरा व हाँसी क्षेत्र के गाँवों के विरुद्ध भीजनरलवार्नकोर्टलैंड की कार्यवाहीचली।उसनेइनगाँवोंमेंभट्टियोंकोविशेष रूप से निशानाबनाया, पटियाला व जीन्द के शासकों ने भीकोर्टलैंड की इस कार्यवाहीमेंमददकी।

यहसंदर्भ संत साहबरामराहड द्वारावर्णितविद्रोहकी ऐतिहासिकतथ्यों द्वारापुष्टिहोतीहै।इस प्रकारकवि ने समाज के विभिन्नपक्षोंकोसमक्ष रखा हैजिसमेंनकारात्मकऔरसकारात्मक, दोनोंहीपक्ष मौजूदहैं।कवि ने समाज के बिगड़ते–बनतेपहलू के साथग्रामीणअंचलमेंदेशप्रेम की भावना का भीभली–भाँतिचित्रणकियाहै। यह इनके साहित्य की एकविशेषउपलब्धि है।

उपसंहार :

अतः संत साहबराम का साहित्य अपनेआसपास की गतिविधियों से जीवंतहै।लोक–जीवन की घटनाएंऔरउसकीदिनचर्या उनके साहित्य कोपरिचालितकरतीहैं।समाजमेंमौजूदमजहब, जाति–भेद, भाईचारा, वेशभूषा, त्योहारआदि का वर्णनकवि ने बहुतअच्छेढंग से कियाहै।इसकेअतिरिक्तसन्न 1857 की क्रांति, बिश्नोईयोंऔरमुसलमानों के बीचटकराव, बादमेंउनकाबीघड़ से पंजाब की तरफपलायनआदि का वर्णनकवि ने विस्तार से कियाहै।बिश्नोईयों की पर्यावरणसंरक्षण के लिए निष्ठाजम्भसारमेंअच्छे से देखनेकोमिलतीहैजिसकेपरिणामस्वरूपब्रिटिश राज मेंअंग्रेजोंकोपरवानालिख करदेनापड़ाथा। क्षेत्रीय स्तरपरराजनीतिकउठा–पटक का सूक्ष्म चित्रण जम्भसारमेंदिखनेकोमिलताहैजो एक धरोहर के रूपमेंमौजूदहै। ऐसाकोईअन्य ग्रंथअभीतकअस्तित्वमेंआयाहीनहीं। इस प्रकार संत साहबराम का साहित्य युगबोध की दृष्टि से समृद्ध एवंसम्पन्नहै।

सहायकग्रंथः

1. सं0 कृष्णानंद शास्त्री :जम्भसार भाग–1 और2, प्रथम सं0 1982
2. Gazetteer of the Hissar District : comp. and Pub. Under the Authority of the Punjab Govt.1883-84
3. डॉ0 हीरालालमाहेश्वरी : जाम्भोजी, बिश्नोईसम्प्रदाय औरसाहित्य, कलकत्ता, बी०आर०पब्लिकेशन्स, 1969)
4. डॉ०रामविलास शर्मा : भाषाऔरसमाज, पिपल्सपब्लिशिंगहाउस, दिल्ली
5. पं0 विश्वेश्वरनाथरेउ : मारवाड़ का इतिहास, महाराजामानसिंहपुस्तकप्रकाशन, जोधपुर, राजस्थानीग्रंथागार, 1940

[9]जम्भसारभाग–2, पृ0 359

[10]जम्भसार भाग–2, पृ0 358